बी.एन.एम.पी. & एच.एस. स्कूल, धोलाई के शताब्दी समारोह में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 28 जनवरी 2024, मंगलवार	समय : 3.30 PM	स्थान : धोलाई, कछार

-
-
- उपस्थित अन्य अतिथि गण,
- विद्यालय के सम्मानित अधिकारी गण,
- शिक्षक एवं कर्मचारी गण,
- मेरे प्यारे विद्यार्थियों,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- उपस्थित अभिभावक गण,
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार,

बाम नित्यानन्द मल्टी पर्पस हायर सेंकंडरी स्कूल (B.N.M.P. & H.S. School) के इस भव्य शताब्दी समारोह में आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित करने के लिए मैं विद्यालय प्रबंधन और शताब्दी समारोह आयोजन समिति को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। साथ ही विद्यालय के शतवर्षीय उत्सव के लिए बधाई देता हूं।

मुझे बताया गया है कि 1922 में स्थापित यह स्कूल बराकघाटी का सबसे पुराना और श्रेष्ठ शिक्षण संस्थान है। मैं शिक्षा के इस मंदिर की जड़ों को सींचने में अपना योगदान देने वाले सभी महानुभावों, समाजसेवियों, शिक्षकों एवं अधिकारियों को नमन करता हूं।

मैं 100 वर्षों की गौरवशाली यात्रा में विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय की पूरी टीम की सराहना करता हूं।

मुझे बताया गया है कि 1922 में अपनी स्थापना के बाद से ही यह विद्यालय विकास की सीढ़ियां चढ़ता रहा है। 1938 को विद्यालय को धोलाई हाईस्कूल के साथ मिला दिया गया। 1940 में विद्यालय को पूर्ण हाईस्कूल का दर्जा प्राप्त हुआ। एक लंबी यात्रा के बाद 1962 में इसे बाम नित्यानन्द मल्टी पर्पस एचएस स्कूल में अपग्रेड किया गया, जिसमें विज्ञान और कला दोनों स्ट्रीम हैं। 1992 में विद्यालय ने वोकेशनल स्ट्रीम को भी शामिल कर लिया।

मुझे खुशी है कि स्कूल में एनसीसी और स्काउट्स इकाइयां भी हैं। स्कूल को 10वीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षा केंद्र की मान्यता भी प्राप्त है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शैक्षणिक उपलब्धियों के अलावा विद्यालय चरित्र निर्माण पर भी जोर देता है। संस्थान ने अपने विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए प्रेरित किया है। मुझे खुशी है कि स्कूल खेल और शैक्षणिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता है और साथ ही नवाचार और विवेचनात्मक सोच को बढ़ावा देने पर भी जोर देता है। विद्यार्थियों की सफलता स्कूल की उपलब्धियों का प्रतिबिंब होता है। शैक्षणिक संस्थानों की जड़ें जितनी गहरी होंगी, देश की प्रगति उतनी ही अधिक होगी।

मित्रों,

शिक्षा वो हथियार है, जिससे विद्यार्थी अपने पथ के कांटों को हटाते हुए, जिंदगी का सफर आसान कर सकते हैं, वह निर्णय ले सकते हैं, खुद के साथ दूसरों की राह भी आसान कर सकते हैं। शिक्षा का उद्देश्य मात्र किताबी ज्ञान प्राप्त करना या धनार्जन नहीं है, इसका उद्देश्य बहुत बड़ा है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था-

"जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और वैचारिक सामंजस्य स्थापित कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।”

आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे निरन्तर सीखने और ज्ञान के अनुरूप अपने आपको ढालने की योग्यता विकसित की हो। सीखने के साथ ही यह भी जरूरी है कि विद्यार्थी चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तत्पर रहें तथा स्वयं अपने मार्गदर्शक मूल्यों और लक्ष्यों का निर्धारण करें।

मैं विद्यालय के शिक्षकों से अपील करता हूं कि भविष्य के लिए पाठ्यक्रम तैयार करते वक्त आप सभी विद्यार्थियों के समग्र विकास को ध्यान में रखें। यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त करें, बल्कि जीवन के कौशल भी सीखें। आने वाले समय में हर क्षेत्र में ऐसे लोगों की मांग होगी, जो न केवल तकनीकी रूप से कुशल होने के साथ-साथ भावनात्मक रूप से भी स्थिर हों और हर परिस्थिति और हर संकट का सामना कर सकें।

बच्चों की शिक्षा में स्कूल के शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मगर आयु के अनुसार इन बच्चों को कहीं ना कहीं अभिभावकों से हिम्मत और हौसले की जरूरत होती है। शिक्षक एक विचार देता है, सफलता का सूत्र देता है। लेकिन उस विचार को सींचने और उसे हरा-भरा रखना मां-बाप का कर्तव्य होता है।

इसलिए मैं अभिभावकों से कहना चाहूंगा कि आप अपने बच्चों का हौंसला बढ़ाएं। बच्चों को बहुमुखी प्रतिभाशाली बनाने के लिए शिक्षकों का साथ दें। माता-पिता और शिक्षकों के तालमेल से विद्यार्थी के जीवन का सफलतम निर्माण होगा।

मित्रों,

हमारी नई पीढ़ी को भविष्य के लिए तैयार होना चाहिए, चुनौतियों को स्वीकार करने और उनका सामना करने का स्वभाव होना चाहिए, यह केवल शैक्षणिक संस्थान के विजन और मिशन के माध्यम से ही संभव है।

युवाओं के मन और हृदय को तैयार करने का दायित्व उसके शैक्षणिक संस्थानों द्वारा पूरी की जानी चाहिए। इसलिए मैं विद्यालय प्रशासन से अपील करता हूं कि विद्यालय विकास के लिए वे एक रोडमैप तैयार करें। भविष्य बनाने वाले नवाचार यहां किए जाएं तथा देश के विश्व गुरु बनाने वाले नायक यहां से निकलें। इसके लिए आपको संकल्प के साथ लगातार काम करना होगा।

प्रिय विद्यार्थियों,

आप सभी देश के भविष्य हैं। आने वाले समय में आपको ही देश की जिम्मेदारियां उठानी हैं। हमें एक ऐसा भारत बनाना है, जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी, और जिसका विस्तार आधुनिकता के आकाश में अनंत तक होगा।

सफलता आपको कभी भी 1 दिन में नहीं मिलती है, लेकिन एक दिन जरूर मिलती है। जिस तरह दिन और रात एक जैसे नहीं होते, उसी तरह हमारे जीवन के सफर में भी कई उतार-चढ़ाव आते हैं। परंतु, सफल व्यक्ति वह होते हैं, जो अपने लक्ष्य को पाने के लिए लगातार आगे बढ़ते रहते हैं। इसलिए मैं आप सभी से अपील करता हूँ कि आप दृढ़ संकल्प, समर्पण और विश्वास के साथ अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए आगे बढ़ें।

मैं इसके साथ ही आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप अपनी संस्कृति को याद रखें और नैतिक मूल्यों पर ध्यान दें। ध्यान रखें कि सफलता केवल नम्बर और ग्रेड से परिभाषित नहीं होती है, बल्कि सफलता के लिए ज्ञान और कौशल का उपयोग जरूरी है।

आप अपने जीवन में जुनूनी बनें। आप ऐसे सकारात्मक कार्य के लिए अवश्य समय निकालें, जिससे आपको खुशी और संतोष मिले। ऐसे कार्य को करने से आप में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा और आपके अन्य कार्यों को करने की क्षमता भी बढ़ेगी।

आप सफल हो सकते हैं। आपकी सफलता आपके उत्साह, मेहनत और विश्वास पर निर्भर करती है। अपनी सोच और कार्यों में सकारात्मक रहें और अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपनी बहुमुखी प्रतिभा के दम पर खुद को साबित करेंगे और समाज को उज्ज्वल बनाएंगे।

अतं में मैं स्कूल के विद्यार्थियों को उनके सफल भविष्य और विद्यालय प्रशासन को बच्चों के जीवन को आकार देने में उनके प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ देता हूं।

पुनः आप सभी को विद्यालय के शतवर्षीय उत्सव की बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद।

जय हिन्द।